महामत निमूना ख्वाब का, क्यों दीजे हक वस्तर।
हक नूर न आवे सब्द में, पर रह्या न जाए क्योंए कर।। ४५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज के वस्त्रों की उपमा संसार में कैसे दी जाए? श्री राजजी महाराज के नूर का वर्णन शब्दातीत है, पर बिना वर्णन किए भी कैसे रहें।

॥ प्रकरण ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ ९२७ ॥

हक मेहेबूब के भूखन

भूखन सब्दातीत के, क्यों इत बरनन होए।
सोभा अर्स सरूप की, इत कबहूं न बोल्या कोए।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज के आभूषणों का वर्णन शब्दातीत है। उनकी शोभा का वर्णन यहां कैसे करूं? परमधाम के पारब्रह्म के स्वरूप की शोभा का वर्णन यहां आज दिन तक किसी ने नहीं किया।

तो क्यों माने बीच दुनियां, ए जो हक जात भूखन।
रैन अंधेरी क्यों रहे, जब जाहेर हुआ बका दिन।। २ ।।

दुनियां वाले श्री राजजी महाराज के आभूषणों की हकीकत को क्यों मानते? अब श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से अज्ञान की अंधेरी रात मिटकर अखण्ड परमधाम के ज्ञान का सूर्य उदय हो गया है।

अनेक गुन नंग इनमें, रूह दिल चाह्या जब।
जिन जैसा दिल उपजे, सो होत आगूं से सब।। ३ ।।

परमधाम के नगों में अनेक तरह के गुण हैं। जिस समय जिसके दिल में जैसी इच्छा होती है, यह पहले से ही रूप बदले नजर आते हैं।

जेती अरवाहें अर्स में, ताए मन चाह्या सब होए।
दिल चितवन भी पीछे करे, आगे बनि आवे सोए।। ४ ।।

परमधाम की जितनी रूहें हैं, उनकी सब इच्छाएं मन के चाहे अनुसार पूरी हो जाती हैं। दिल में इच्छा पीछे होती है, काम पहले हो जाता है।

जैसा मीठा लगे मन को, भूखन तैसा ही बोलत।
गरम ठंढा सब अंग को, चित्त चाह्या लगत।। ५ ।।

मन को जैसा अच्छा लगता है, आभूषण वैसे ही स्वरों से बोलते हैं। अंग को गर्म और ठंडा चित्त के चाहे अनुसार लगते हैं।

हक बरनन करत हों, कहूं नया किया सिनगार।
ए सब्द पोहोंचे नहीं, आवत न माहें सुमार।। ६ ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप का वर्णन करती हूं तो कहना पड़ता है, सिनगार नया है। उस नए सिनगार को वर्णन करने के लिए यहां के शब्द नहीं पहुंचते, क्योंकि उसकी भी शोभा बेशुमार है।

Nijanand App

वस्तर और भूखन, ए हक अंग का नूर।
सो निमख न जुदा होवहीं, ज्यों सूरज संग जहूर।।७।।

वस्त्र और आभूषण यह सब श्री राजजी के अंग के नूर की ही शोभा हैं। जैसे सूर्य और सूर्य की किरणें अलग नहीं होतीं, उसी प्रकार वस्त्र और आभूषण एक क्षण भी अंगों से अलग नहीं होते।

इन जिमी आसिक क्यों रहे, बिना किए अपनों आहार।
खाना पीना एही आसिकों, अर्स रूहों एही आधार।।८।।

संसार में आशिक रूहें श्री राजजी महाराज के दीदार जो उनका आहार है, के बिना कैसे रह सकती हैं? अर्श की आशिक रूहों का खाना-पीना दीदार ही है।

सोई कलंगी सोई दुगदुगी, सोभे पाग ऊपर।
केहे केहे मुख एता कहे, जोत भरी जिमी अंबर।।९।।

पाग के ऊपर वही कलंगी, वही दुगदुगी शोभा देती है, जिसकी किरणें जमीन से आकाश तक फैली हैं। यहां की जबान से तो इतना ही कहा जा सकता है।

कई विध के सुख जोत में, और कई सुख सुन्दरता।
कई सुख तरह सलूकियां, सिफत पोहोंचे न हक बका।।१०।।

पाग के ऊपर दुगदुगी और कलंगी की जोत में कई तरह के सुख, सुन्दरता और सलूकी है। उस अखण्ड की शोभा का वर्णन करना यहां सम्भव नहीं है।

मोतिन की जोत क्यों कहूं, इन जुबां के बल।
सोभा लेत दोऊ श्रवनों, अति सुन्दर निरमल।।११।।

यहां की जबान के बल से परमधाम के मोतियों के तेज का वर्णन कैसे करूं? जो सबसे अधिक सुन्दर और निर्मल हैं और दोनों कानों में शोभा देते हैं।

मोती जोत अचरज, और अति उत्तम दोऊ लाल।
जो रूह देखे नैन भर, तो अलबत बदले हाल।।१२।।

ऐसी हैरान करने वाली जोत से भी उत्तम दो लाल हैं, जिनको आत्मा देख-देखकर अपनी हालत बदल डालती है और मगन हो जाती है।

कहे जुबां जोत आकास लों, जोतें सोभा कई करोर।
सो बोल न सके जुबां बेवरा, इन अकल के जोर।।१३।।

यहां की जबान से तो कहते हैं कि जोत आकाश तक फैली है, परन्तु जोत में करोड़ों प्रकार की शोभा है, जो यहां की अक्ल और जबान से कही नहीं जा सकती।

ए तो मोती लाल कुन्दन, वाहेदत खावंद श्रवन।
आकास जिमी भरे जोत सों, तो कहा अचरज है इन।।१४।।

रूहों के धनी श्री राजजी महाराज के कानों में लाल और मोती के नग सोने में जड़े दिखाई देते हैं। जिनकी किरणों की जोत आकाश और जमीन में भरी है, तो इसमें हैरानी की क्या बात है?

Nijanand App

चोली अंग सों लग रही, ज्यों अंग नूर जहूर।
ए लज्जत दिल तो आवहीं, जो होवे अर्स सहूर।। १५ ।।

श्री राजजी महाराज के जामे की चोली अंग पर टाइट फिट है और ऐसी लगती है जैसे वह अंग की ही शोभा है। यदि परमधाम की जागृत बुद्धि हो तो इसका स्वाद दिल को आ सकता है।

एक देख्या हार हीरन का, कई कोट सूरज उजास।
इन उजास तेज बड़ा फरक, ए सुख सीतल जोत मिठास।। १६ ।।

मैंने एक हीरे का हार श्री राजजी के गले में पहने देखा, जिसका करोड़ों सूर्यों के समान उजाला है, परन्तु उजाले में भी बड़ा फर्क हैं। हीरों का उजाला शीतल और सुखदायी है।

हार दूजा मानिक का, जानों उनथें अति सोभाए।
जब लालक इनकी देखिए, जानों और सबे ढंपाए।। १७ ।।

दूसरा हार मानिक का है जो उससे अधिक शोभायमान है। जब इसकी लालिमा को देखते हैं तो सब रंग ढक जाते हैं।

तीसरा हार अंग देखिया, अति उज्जल जोत मोतिन।
जानों सबथें ऊपर, एही है रोसन।। १८ ।।

गले में तीसरा हार उज्ज्वल मोतियों के नग का शोभा देता है, लगता है सबसे अधिक रोशनी इसी की है।

जब हार चौथा देखिए, जानों नीलक अति उजास।
जानों के सरस सबन थें, ए देत खुसाली खास।। १९ ।।

जब चौथा हार नीलम का देखती हूं तो उसकी नीलिमा और भी अधिक है, लगता है यही सबसे प्यारा और सुखदायी है।

हार लसनियां पांचमा, कछू ए सुख सोभा और।
जानों जोत जिमी आकास में, भराए रही सब ठौर।। २० ।।

पांचवां हार लसनियां का है। इसकी शोभा कुछ और ही है, लगता है आसमान और जमीन में सब जगह इसी का तेज फैला है।

जब नंग देखूं नीलवी, जानों एही सुख सागर।
जोत मीठी रंग सुन्दर, जानों के सब ऊपर।। २१ ।।

जब नीलवी के नग की तरफ देखती हूं तो लगता है सबसे बड़ा सुख का सागर यही है। जिसके तेज की किरणों का रंग बड़ा सुन्दर और मीठा लगता है और शोभा अधिक दिखाई देती है।

हारों बीच जो दुगदुगी, माहें नव रतन।
नव जोत नव रंग की, जानों सब ऊपर ए भूखन।। २२ ।।

हारों के बीच में जो दुगदुगी हैं, उनमें नौ-नौ रत्न जुड़े हैं। नौ रंगों की किरणें उठती हैं, जिससे लगता है कि दुगदुगी सबसे अधिक शोभादायक हैं।

Nijanand App

ए जोत सब जुदी जुदी, देखिए माहें आसमान।
सब जोत जोत सों लड़त हैं, कोई सके न काहूं भान।। २३ ।।

रंगों के तेज को जब आसमान में देखें तो अलग-अलग दिखती हैं। जहां उनकी किरणें आपस में टकराती हैं पर किसी का तेज कम नहीं होता।

भूखन सामी न देखिए, जो देख्या चाहे जंग।
पेहेले देखिए आकास को, तो जुध करें नंग सों नंग।। २४ ।।

यदि किरणों की टकराहट देखनी हो तो आभूषणों की तरफ मत देखो। पहले आकाश में देखो, जहां हर नग की किरणें आपस में टकराती हैं।

जो कदी पेहेले हार देखिए, तो वाही नजर भरे जोत।
या बिन कछू न देखिए, सबमें एही उद्दोत।। २५ ।।

यदि पहले हार को देख लें तो नजर में वही रंग समा जाता है, फिर उसके बिना और कुछ नहीं दिखाई देता। उसी का ही तेज सबमें झलकता है।

नेक कहूं बाजू बन्ध की, जोत न जामें सुमार।
तो जो नंग बाजू बन्ध के, सो क्यों आवें माहें विचार।। २६ ।।

बाजूबन्ध की हकीकत अब थोड़ी सी बताती हूं, जिनकी जोत बेशुमार है। बाजूबन्ध के जो नग हैं उनका वर्णन कैसे करूं?

नंग पटली दस रंग की, माहें कई विध के नकस।
ए सलूकी बेल बूटियां, एक दूजे पे सरस।। २७ ।।

बाजूबन्ध के पटलियों में दस-दस नग हैं और कई तरह की नक्शकारी है, जिनकी बेल बूटियों की बनावट एक दूसरे से अच्छी लगती है।

लटके बाजू बन्ध फुन्दन, झलकत झाबे अपार।
कई नंग रंग एक झाबे में, सो एक एक बाजू चार चार।। २८ ।।

बाजूबन्ध के फुन्दन लटकते हैं, जिनके झाबे बेशुमार शोभा दे रहे हैं। झाबों के एक-एक नग के कई-कई रंग दिखाई देते हैं। इस तरह से एक-एक बाजू में चार-चार झाबे लटकते हैं।

तामें नंग कहूं केते जरी, तिन फुन्दन में कई रंग।
रंग रंग में कई किरने, किरन किरन कई तरंग।। २९ ।।

उन झाबों के नग जड़े कहूं या जरी, उनके फुन्दन में कई रंग हैं। रंग-रंग में कई किरणें हैं और किरण-किरण में कई तरंगें हैं।

बांहें हलते फुन्दन लटके, हींचे फुन्दन जोत प्रकास।
बांहें हलते ऐसा देखिए, मानों हींचत नूर आकास।। ३० ।।

श्री राजजी महाराज की बांहें जब हिलती हैं तो फुन्दन हिलते हैं। उनकी जोत चारों तरफ फैलती है। ऐसा लगता है मानो आकाश में उनका नूर झूल रहा है।

Nijanand App

जो पटलियां पोहोंची मिने, सात पटली सात नंग।
सो सातों नंग इन भांत के, मानों चढ़ता आकासे रंग।। ३१ ।।

पोहोंची में सात पटलियां सात रंग की हैं। इन सातों के नगों की किरणें आकाश में चढ़ती दिखाई देती हैं।

स्याम सेत नीली पीली, जांबू आसमानी लाल।
हाए हाए करते पोहोंची बरनन, अजूं होस लिए खड़ा हाल।। ३२ ।।

काला, सफेद, नीला, पीला, जांबू, आसमानी और लाल रंगों की सात पटलियां पोहोंची में शोभा देती हैं। हाय! हाय! ऐसी पोहोंची का वर्णन करते हुए भी यह तन खड़ा है।

जो एक नंग नीके निरखिए, तो रोम रोम छेदत भाल।
जो लों देखों उपली नजरों, तो लों बदलत नाहीं हाल।। ३३ ।।

यदि एक नग को अच्छी तरह से देखें तो रोम-रोम में उसकी किरणें भाले के समान चुभ जाती हैं। जब तक ऊपर की नजर से देखते हैं, तब तक हालत नहीं बदलती।

कड़ियां कांड़ों सोभित, तिनकी और जुगत।
बल ल्याए कई दोरी नंग, रूह निरखें पाइए विगत।। ३४ ।।

कांड़ों में बलदार कड़े पहने हैं, जिसकी डोरियों में कई नग हैं। इनको रूह से देखने में लज्जत आती है।

ए नजरों नंग तो आवहीं, जो आवे निसबत प्यार।
ना तो भूखन हाथ हक के, दिल करसी कहा विचार।। ३५ ।।

रूहों को अंगना होने का प्यार मिले तो उन्हें यह नग सब नजर आएं, नहीं तो श्री राजजी महाराज के हाथों के आभूषण को रूह कैसे दिल से विचार करे?

जुदे जुदे जवेरन की, दस विध की मुंदरी।
दोऊ अंगूठों अंगूठिएं, और मुंदरी आठ अंगुरी।। ३६ ।।

अलग-अलग तरह के नगों की दस मुंदरियां हैं। दो अंगूठों में अंगूठियां और आठ उंगलियों में आठ मुंदरियां हैं।

मानिक मोती नीलवी, पाच पांने पुखराज।
लसनिएं और मनी, रहे कुंदन माहें बिराज।। ३७ ।।

मानिक, मोती, नीलवी, पाच, पन्ना, पुखराज, लसनियां और मणि के नगों की अंगूठियां सोने में सुन्दर शोभा देती हैं।

ए दसे अंगुरियों मुंदरी, नूर नख अंगुरी पतलियां।
पोहोंचे हथेली उज्जल लीकें, प्रेम पूरन रस भरियां।। ३८ ।।

दस उंगलियों में मुंदरियां और उन पतली उंगलियों के नखों का तेज पोहोंचा, हथेली और उज्ज्वल रेखाएं सब प्रेम रस से भरपूर हैं।

Nijanand App

अब चरनो चारों भूखन, चारों में जुदे जुदे रंग।
जानो के रस जवेर के, जैसे जोत अर्स के नंग।। ३९ ।।

अब चरणों के चार आभूषण! चारों के अलग-अलग रंग लगते हैं। अलग-अलग जवेर के हैं जैसे परमधाम के नगों की जोत होती है।

दस रंग नंग माहें झांझरी, ए बानी जुदी झनकार।
ए सोभा अति अनूपम, अर्स के अंग सिनगार।। ४० ।।

झांझरी में दस रंग के नग शोभा देते हैं। इनकी झनकार (आवाज) बड़ी अच्छी लगती है। श्री राजजी महाराज के परमधाम के सिनगार की शोभा अनुपम है।

यामें बेल पात नकस कई, कई करकरी फूल कांगरी।
बानी सोभा सुख देत है, घाट अचरज ए झांझरी।। ४१ ।।

इनमें बेल, पत्ते और नक्शकारी कई तरह की हैं। कई तरह के फूल, दाने, कांगरी में शोभा देते हैं और झांझरी की बनावट बड़ी सुखदाई लगती है।

और बेली कई नकस, मिहीं मिहीं जुगत जिनस।
जब नीके कर देखिए, जानों सब थें एह सरस।। ४२ ।।

कई तरह की बेलें, नक्शकारी बारीक से बारीक युक्ति से बनी हैं। जब उन्हें अच्छी तरह से देखें, तो लगता है यही सबसे अच्छी हैं।

जो सोभावत चरन को, सो केते कहूं गुन इन।
कोई घायल अरवा जानहीं, जो होसी अर्स के तन।। ४३ ।।

यह झांझरी जो चरणों को शोभा देती हैं, उसके गुणों का कहां तक बयान करूं। जिनका तन परमधाम में है, वही घायल रूहें इसका अनुभव कर सकती हैं।

भूखन अंग अर्स के, जानसी कोई आसिक।
अनेक सुख गुन गरभित, ए अर्स सूरत अंग हक।। ४४ ।।

परमधाम के अंगों के आभूषण आशिक रूहें ही जान सकती हैं। श्री राजजी के स्वरूप और अंगों में अनेक प्रकार के सुख और गुण भरपूर हैं।

दोऊ मिल मधुरे बोलत, लेऊं खुसबोए के सुनों बान।
सोभा कहूं के नरमाई, ए भूखन चरन सुभान।। ४५ ।।

दोनों चरणों के आभूषण बड़ी सुन्दर आवाज से बोलते हैं, जिनमें आनन्ददायक खुशबू, मीठी स्वर सुनने को मिलती हैं। इसकी शोभा का वर्णन करूं या नरमाई का, ऐसे धनी के चरणों के आभूषण हैं।

बान मधुरी घूंघरी, ए जुदे रूप रंग रस।
पांच रंग नंग इनमें, जानो उनपे एह सरस।। ४६ ।।

घुंघरी की बहुत मधुर आवाज तथा अलग रूप और रंग हैं। उनमें पांच तरह के नगों के रंग हैं, लगता है उस झांझरी से यह घुंघरी अच्छी है।

Nijanand App

कई करड़े कई बूटियां, नकस नाके रंग और।
ए सोभा कहूं मैं किन मुख, जाको इन चरनो है ठौर।।४७।।

कई तरह की बूटियां और करड़े घूंघरियों में हैं, जिनके नाक के ऊपर कई तरह की नक्शकारी है, जिनका अर्श ही श्री राजजी के चरण हैं। उस शोभा का वर्णन मैं कैसे करूं?

मानो लाल कड़ी मानिक की, माहें कई रंग बेल अनेक।
सिर पतलियों लग रहीं, ए सोभा अति विसेक।।४८।।

लगता है घूंघरियों के कुण्डे मानिक के हैं, जिसमें कई तरह की बेलें और रंग हैं, जो उनके सिरों तक पतली-पतली शोभा देती हैं। यह शोभा खास है।

इन कड़ी के रूप रंग, मिहीं बेली गिनी न जाए।
मानों पुतली वाही की कांगरी, ए जुगत अति सोभाए।।४९।।

इस घुंघरी के कुण्डे के रूप और रंग तथा बारीक बेलें गिनी नहीं जातीं, लगता है यह किसी पुतली की कांगरी जैसे हैं।

अब कहूं रंग कांबीय के, पेहेरी जंजीर ज्यों जुगत।
जुदे जुदे रंग हर कड़ी, नैना देख न होंए तृपित।।५०।।

अब कांबी का रंग कहती हूं जो जंजीर की तरह पहनी हुई शोभा देती है, जिसकी हर कड़ी में अलग-अलग रंग हैं, जिन्हें देख-देख नैन तृप्त नहीं होते।

अनेक कड़ियां जंजीर में, गिनती होए न ताए।
कई रंग नंग एक कड़ीय में, बेल जंजीर गिनी न जाए।।५१।।

एक जंजीर में अनेक कड़ियां हैं (मनके हैं) जिनकी गिनती नहीं होती है। एक-एक कड़ी (मनके) में कई रंग के नग हैं। इस तरह से एक जंजीर की बेलों की गिनती नहीं हो सकती।

ए विचार कीजे जब दिल से, रूह की खोल नजर।
कड़ी कड़ी के रंग देखिए, गिनते होए जाए फजर।।५२।।

आत्मदृष्टि से जब दिल में विचारें तो एक-एक कड़ी के रंग देखते-देखते और गिनते-गिनते सवेरा हो जाएगा।

ऊपर खजूरा कड़ियन का, और कई बेल कड़ियों माहें।
तिन बेलों रंग वेली कड़ियों, ए खूबी क्यों कर कहे जुबांए।।५३।।

कड़ों के ऊपर कई तरह के खजूरे बने हैं और कई तरह की बेलें बनी हैं, उन बेलों के रंग और कड़ियों में बेलियों की सुन्दरता यहां की जबान से कैसे कहें?

तेज जोत सोभा सलूकी, रूह केताक देखे ए।
खुसबोए नरम स्वर माधुरी, और कई सुख गुझ इनके।।५४।।

इनके तेज को, जोत को और बनावट को रूह कहां तक देखे? इनमें सुगन्धि है, नरमाई है, मधुर स्वर हैं और कई तरह के छिपे सुख हैं।

Nijanand App

पांच रंग नंग हर कड़ी, कई बेल फूल पात।
कई कटाव कई बूटियां, इन जुबां गिने न जात।।५५।।

हर एक कड़ी में पांच तरह के नगों के रंग शोभा देते हैं और कई तरह के बेल, फूल, पत्ते, कटाव, और बूटियां शोभा देती हैं जो यहां की जबान से गिनी नहीं जातीं।

हर कड़ी कई करकरी, सो देखत ज्यों जड़ाव।
नंग जोत नजरों आवहीं, कई नकस कई कटाव।।५६।।

हर कड़ी में कई तरह के दाने हैं, जो जड़ाव जैसे लगते हैं। कई तरह की नक्शकारी और कटाव तथा नगों की जोत दिखाई देती है।

सखती न देवें चरन को, ना बोझ देवें पाए।
गुन सुख एक भूखन, इन मुख गिने न जाए।।५७।।

यह कांबी चरण को चुभती नहीं है और न ही चरण पर बोझा लगती है। ऐसे अनेक गुण और सुखों से भरे आभूषण हैं जो इस मुख से गिने नहीं जाते।

ए देखत अचरज भूखन, बैठे अंग को लाग।
ए सोभा कही न जावहीं, कोई देखे जिन सिर भाग।।५८।।

बड़ी हैरानी की बात यह देखो कि आभूषण अंग को चिपटे हैं, अर्थात् अंग की ही शोभा हैं, जो कही नहीं जा सकती। यह जिनके भाग्य में हैं वही देख सकते हैं, अर्थात् रूहें ही देख सकती हैं।

सरूप पुतलियों मोतियों, हैं ऊपर हर जंजीर।
सोभित सनमुख चेतन, क्यों कहूं इन मुख नीर।।५९।।

कांबी की हर एक जंजीर के मनकों में पुतलियां बनी हैं, जो सामने से सब चेतन दिखाई देती हैं। यहां के मुख से उनकी झलक कैसे बताऊं?

हक चाही बानी बोलत, हक चाही जोत धरत।
खुसबोए नरमाई हक चाही, हक चाह्या सब करत।।६०।।

यह कांबी श्री राजजी के चाहे अनुसार आवाज बोलती है और रंग बदलती है। इसकी खुशबू और नरमाई श्री राजजी के चाहे अनुसार होती है। जैसा धनी चाहते हैं वैसा यह करती है।

जैसे सरूप रूहन के, चरनों लगे गिरदवाए।
त्यों पुतलियां मोतिन की, कदमों रही लपटाए।।६१।।

जैसे श्री राजजी के चरणों को रूहें घेरकर बैठी हैं। इस तरह से मोतियों की पुतलियां चरणों की कांबी में लिपटी हैं।

सब समूह भूखन जब देखिए, अदभुत सोभा लेत।
जुबां खूबी क्यों केहे सके, हक दिल चाही सोभा देत।।६२।।

जब पूरे आभूषणों की शोभा देखो तो यह शोभा अत्यधिक विचित्र है जो श्री राजजी महाराज के दिल के चाहे अनुसार सुन्दर दिखाई देती है। यहां की जबान से वहां की खूबी का वर्णन कैसे हो?

Nijanand App

हाथ दीजे भूखन पर, सो हाथों लगत नाहें।
पेहेने हमेसा देखिए, ऐसे कई गुन हैं इन माहें।। ६३ ।।

आभूषण पर हाथ फेरे तो हाथ को नहीं लगते और हमेशा दिखाई देते हैं कि श्री राजजी महाराज ने पहन रखे हैं। इस तरह से कई गुण आभूषणों में हैं।

अर्स तन हाथ अर्स तने, एक दूजे परस होए।
हाथ वस्तर या भूखन, दूजा अर्स तने लगे न कोए।। ६४ ।।

परमधाम के तन के एक हाथ से दूसरे हाथ को छुआ जा सकता है, परन्तु हाथ के वस्त्र या आभूषण एक दूसरे के तन को नहीं चुभते।

और हाथ कोई है नहीं, कह्या वास्ते भूखन के।
और वस्तर ना कछू भूखन, जो इत निमूना लगे।। ६५ ।।

और कोई दूसरा हाथ नहीं है। यह तो आभूषणों की महिमा बताई है। यहां वस्त्र और आभूषण कुछ नहीं हैं जिनका नमूना बता सकूं।

है एक हमेसा वाहेदत, दूजा जरा न काहूं कित।
ए देखत सो भी कछुए नहीं, और कछू नजरों भी न आवत।। ६६ ।।

परमधाम में सब एक तन, एक दिल हैं। दूसरा कुछ है ही नहीं। जो दिखाई देता है वह भी कुछ नहीं है। दूसरा कुछ वाहेदत के बिना दिखाई नहीं देता।

वाहेदत का वाहेदत में, वस्तर भूखन पेहेनत।
ए नूर है इन अंग का, ए सुन्य ज्यों ना नासत।। ६७ ।।

वाहेदत के वस्त्र, आभूषण वाहेदत के तन पहनते हैं। यह श्री राजजी महाराज के अंग का नूर हैं। यह संसार की तरह नाशवान नहीं हैं।

ए मिहीं बातें अर्स सुखकी, सो जानें अर्स अरवाए।
इन जिमी सो जानहीं, जिन मोमिन कलेजे घाए।। ६८ ।।

यह खास (बारीक) बातें परमधाम के सुख की हैं और इन्हें रूहें ही जानती हैं। संसार में वही मोमिन जानेंगे जिनके कलेजे में पिया की चाह के घाव लगे हैं।

इन जिमी आसिक क्यों रहे, वह खिन में डारत मार।
तो लों रहे सहूर में, जो लों रखे रखनहार।। ६९ ।।

आशिक रूहें इस संसार में चोट खाकर कैसे रह सकती हैं? इन वस्त्रों और आभूषणों की शोभा एक क्षण में घायल कर देती है, परन्तु जब तक श्री राजजी रख रहे हैं तब तक रह रहे हैं।

एही काम आसिकन के, फेर फेर करे बरनन।
विध विध सुख सरूप के, सुख लेवें सिनगार भिन भिन।। ७० ।।

आशिक रूहों का यही काम है कि वह बार-बार सिनगार को देखें और वर्णन करें तथा श्री राजजी महाराज के अलग-अलग सिनगार के सुख लेवें।

Nijanand App

एही आहार आसिकन का, एही सोभा सिनगार।
झीलें सागर वाहेदत में, मेहेर सागर अपार।।७१ ।।

आशिक रूहों का यही आहार है कि वह श्री राजजी की शोभा और सिनगार के सागर में गर्क रहें। श्री राजजी के एकदिली के सागर में धनी की मेहर से झीलें और आनन्द लें।

महामत देखे विवेकसों, हक वस्तर और भूखन।
सब अंग सोभा अंगों की, ज्यों दिल रूह होए रोसन।।७२ ।।

श्री महामतिजी बड़े ध्यान से श्री राजजी महाराज के वस्त्रों और आभूषणों को देखती हैं, तो यह सब श्री राजजी के अंग के नूर की शोभा ही है, ऐसा दिल को पता लगता है।

।। प्रकरण ।। १८ ।। चौपाई ।। ९९९ ।।

जोबन जोस मुख बीड़ी छबि

फेर फेर पट खोलें हुकम, निसबत जान रूहन।
हक मुख अंग इस्क के, ले देखिए अर्स अंग तन।। १ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम ने रूहों को श्री राजजी की अंगना जानकर बार-बार अज्ञानता के परदे हटाए हैं। अब अर्श के अंगों से ही श्री राजजी महाराज का मुखारबिन्द और अंग दिल में इश्क लेकर देखो।

हक बरनन जिमी सुपने, हुकमें कह्या नेक सोए।
हक इस्क एक तरंग से, रूह निकस न सके कोए।। २ ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप का वर्णन हुकम ने थोड़ा सा संसार में बताया है। इश्क की एक तरंग से ही रूह निकल नहीं सकती।

सुन्दर मुख मासूक का, और अंग सबे सुन्दर।
सो क्यों छूटे आसिक से, जब चुभे हैड़े अन्दर।। ३ ।।

माशूक श्री राजजी महाराज का मुखारबिन्द और सभी अंग सुन्दर हैं, जो श्री राजजी महाराज की आशिक रूहों के दिल में चुभे रहते हैं, वह कैसे छूटेंगे।

क्यों कहूं मुख की सलूकी, और क्यों कहूं सुन्दरता।
ए आसिक जाने मासूक की, जिन घट लगे ए घा।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की बनावट और सुन्दरता कैसे कहूं? जिन रूहों को दिल में चोट लगी हो वही श्री राजजी महाराज के स्वरूप को जानती हैं।

मुख चौक सलूकी क्यों कहूं, कछू जानें रूह के नैन।
ए सुख सोई जानहीं, जासों हक करें सामी सैन।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की सम्पूर्ण शोभा का कैसे वर्णन करूं? यह रूहें ही अन्तर्दृष्टि से जानती हैं, क्योंकि इसकी लज्जत उन्हीं को मिलती है, जिनसे श्री राजजी महाराज इशारों से बातें करते हैं।

Nijanand App